गुरु नानक – सबद २३

तीरथ तप दइआ दत दान ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ४

तीरथ तप दइआ दत दान ॥
जे को पावै तिल का मान ॥
सुणिआ मंनिआ मन कीता भाउ ॥
अंतरगत तीरथ मल नाउ ॥
सभ गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विण गुण कीते भगत न होइ ॥
सुअसत आथ बाणी बरमाउ ॥
सत सुहाण सदा मन चाउ ॥
कवण सु वेला वखत कवण कवण थित कवण वार ॥
कवण सि रुती माह कवण जित होआ आकार ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेख पुराण ॥
वखत न पाइओ कादीआ जि लिखन लेख कुराण ॥
थित वारु ना जोगी जाणै रुत माह ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
किव कर आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखण सभ को आखै इक दू इक सिआणा ॥
वडा साहिब वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

सार: कायनाती एकता की पूरी समझ हासिल करने के लिए, जिज्ञासु को सचेत रूप से सुनने, आत्म-अन्वेषण करने और व्यवहार में जीने के प्रयास की आवश्यकता होती है। जब साधक स्वयं को जान जाता है, तो प्रकृति के कई पहलुओं को स्वीकार करने के लिए आंतरिक और बाहरी गुणों की गंभीर समझ उभरती है।

तीरथ तप दइआ दत दान ॥
तीर्थयात्रा, तपस्या, दान और भिक्षा जैसी प्रथाओं को धार्मिक पालन के हिस्से के रूप में किया जाता है।

जे को पावै तिल का मान ॥
यह मन को क्षण भर की संतुष्टि का एहसास दिलाते हैं, जिसका रत्ती भर भी मूल्य नहीं है।

सुणिआ मंनिआ मन कीता भाउ ॥
सक्रिय रूप से सुनने, आत्मसात करने और आत्मनिरीक्षण के माध्यम से मन को सशक्त बनाने से गहरी समझ हासिल होती है।

अंतरगत तीरथ मल नाउ ॥
यह आत्म-चिंतन की तीर्थयात्रा पर निकलने जैसा है, जो मन को शुद्ध करने में मदद करता है।

सभ गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
सभी गुण अदृश्य सर्वव्यापी ऊर्जा से पैदा होते हैं, इस वास्तविकता की तरफ़ समर्पण से झूठी पहचान का अहंकार ग़ायब हो जाता है।

विण गुण कीते भगत न होइ ॥
आंतरिक और बाहरी गुणों पर विचार किए बिना कोई भी समर्पित साधक नहीं बन सकता।

सुअसत आथ बाणी बरमाउ ॥
आध्यात्मिक ज्ञान के खज़ानों पर चिंतन को केन्द्रित करके उनका पालन करें।

सत सुहाण सदा मन चाउ ॥
सत्य सबसे गुणी गुण है; यह मन को हमेशा प्रसन्नता की स्थिति में रखता है।

कवण सु वेला वखत कवण कवण थित कवण वार ॥
समय, क्षण, तिथि और दिन अज्ञात हैं।

कवण सि रुती माह कवण जित होआ आकार ॥
वह ऋतु और महीना अज्ञात है जब निराकार सर्वव्यापी चेतना स्वयं एक साकार रूप में प्रकट हुई।

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेख पुराण ॥
विद्वान, पुजारी स्थापना के क्षण को समझने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि इसका उल्लेख 'पुराण' में नहीं है।

वखत न पाइओ कादीआ जि लिखन लेख कुराण ॥
धार्मिक विद्वान इसे समझ नहीं पाए हैं क्योंकि यह 'क़ुरान' में नहीं लिखा गया है।

थित वार ना जोगी जाणै रुत माह ना कोई ॥
प्रबुद्ध सन्यासी, तपस्वी भी स्थापना के दिन, हफ़्ते, मौसम और महीने से अनजान हैं।

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
रचयिता, सर्वव्यापी चेतना, ही जानती है जब वह स्वयं रचना के रूप में प्रकट होती है।

किव कर आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
कोई कैसे दावा, उपमा और इज़हार कर सकता है, और परिचित हो सकता है?

नानक आखण सभ को आखै इक दू इक सिआणा ॥
नानक कहते हैं कि हर कोई स्वयं को दूसरों की तुलना में अधिक प्रबुद्ध बताता है।

वडा साहिब वडी नाई कीता जा का होवै ॥
सर्वोच्च महानता चिंतन में है क्योंकि सारी जागरूकता उसी से पैदा होती है।

नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥
नानक कहते हैं कि जो लोग स्वयं को प्रबुद्ध घोषित करते हैं वे कोई आध्यात्मिक प्रगति नहीं कर सकते। (२१)

तत्त्व: गुरु नानक के अनुसार, चिंतन के साथ संबंध स्थापित करने से शक दूर होते हैं, गलत धारणाएं स्पष्ट होती हैं और अहंकार को ख़त्म कर आध्यात्मिक प्रगति का रास्ता बनता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com